B.Ed. 2nd YEAR

WOMEN'S TRAINING COLLEGE

PATNA UNIVERSITY, PATNA

PSS – 02
METHODS OF TEACHING HINDI - II
BASIC SKILLS OF LANGUAGE

Course No.- 7B
Course Credit - 02

Presented By

MAHADEO KUMAR

GUEST TEACHER

W.T.C, P.U

भाषा कौशल का अर्थ

- भाषा एक अभिव्यक्ति का साधन है। अभिव्यक्ति का माध्यम कौशल होते है। भाषा विज्ञान तथा व्याकरण अभिव्यक्ति का सैद्धान्तिक पक्ष होता है। और भाषा कौशल अभिव्यक्ति का व्यावहारिक पक्ष होता है। व्यक्ति की संप्रेषण की सक्षमता भाषा कौशलों की दक्षता पर ही निर्भर होती है। भाषा की प्रभावशीलता का मानदंड बोधगम्यता होती है। जिन भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति करना चाहते है उन्हें कितनी सक्षमता से बोधगम्य कराते है यह भाषा कौशलों के उपयोग पर निर्भर होता है।
- भाषा हमारे जीवन का अति महत्वपूर्ण अंग होती है। हर व्यक्ति को अपने विचार और भावों की अभिव्यक्ति के लिए एक माध्यम की आवश्यकता होती है और भाषा इसके लिए सबसे सार्थक माध्यम होता है। परन्तु अपने विचारों को सही से अभिव्यक्त करने हेतु कुछ कौशल होते हैं, जिनके सही इस्तेमाल से ही व्यक्ति अपने विचारों या भावों को सही अर्थ में सही रूप से किसी के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है।
- भाषा कौशल हमारे व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है और एक योग्यता प्रदान करता है, जो हमें दूसरे व्यक्तियों से भिन्न बना सकती है। इसके द्वारा एक साधारण से विचार को भी व्यक्ति उत्तम शब्दावली एवं सही लय और प्रवाह के इस्तेमाल से बहुत प्रभावशाली बना सकता है।

भाषा कौशल की विशेषताएँ

- भाषा कौशल के विस्तृत विवेचन से विशेषताओं एवं प्रकृति का बोध होता है। भाषा कौशल की सामान्य विशेषताएँ भाषा इस प्रकार है –
- कौशल भाषा का व्यावहारिक पक्ष है।
- भाषा कौशल सम्प्रेषण का साधन तथा मुख्य माध्यम है।
- भाषा कौशल में मानसिक शारीरिक अंगों, ज्ञान-इन्द्रियॉं तथा कर्म-इन्द्रिया क्रियाशील होती है।
- भाषा कौशल अर्जित किए जाते है, इसके लिए प्रशिक्षण तथा अभ्यास किया जाता है।
- भाषा कौशल में प्रत्यक्षीकरण तथा मानसिक व्यवस्था की आवश्यकता होती है।
- भाषा कौशल के दो घटक – (अ) पाठ्य-वस्तु तथा (ब) अभिव्यक्ति होते है।
- भाषा कौशल के दो प्रवाह- (अ) लिखना- पढ़ना तथा (ब) बोलना- सुनना है।
- भाषा कौशल का उद्देश्य बोधगम्यता है।
- भाषा कौशल से सम्प्रेषण की सक्षमता का विकास होता है।
- भाषा कौशल से शाब्दिक अत: प्रक्रिया होती है।
- भाषा कौशल की प्रभावशीलता का आकलन कौशलों की शुद्धता तथा बोधगम्यता से किया जाता है।
- भाषा कौशलों का भाषा विज्ञान तथा व्याकरण ही मुख्य आधार होता है।
- भाषा कौशल के मुख्य रूप-लिखना, पढ़ना बोलना तथा सुनना है।

भाषाई कौशल

मुख्य रूप से बुनियादी तौर पर भाषाई कौशलों को 4 भागों में विभाजित किया गया हैं -

1. श्रवण कौशल (सुनकर अर्थ ग्रहण करने का कौशल)
2. वाचन कौशल (बोलने का कौशल)
3. पठन कौशल (पढ़कर अर्थ ग्रहण करने का कौशल)
4. लेखन कौशल (लिखने का कौशल)

श्रवण कौशल (सुनकर अर्थ ग्रहण करने का कौशल)

- श्रवण कौशल का अर्थ - श्रवण का अर्थ" सुनना" होता है अतः श्रवण कौशल का संबंध "कर्ण" (कान) से है। ध्वनियों या उच्चारण को सुनना और सुनकर उसके अर्थ को समझना और उसे ग्रहण करने की योग्यता श्रवण कौशल कहलाता है।

- श्रवण कौशल का महत्व
  - ✓ बच्चा जन्म के बाद ही सुनने लगता है, यह ध्वनियाँ उसके ज्ञान का आधार बनती है।
  - ✓ श्रवण कौशल ही अन्य भाषायी हौसलों को विकसित करने का प्रमुख आधार बनता है।
  - ✓ इससे ध्वनियों के सूक्ष्म अंतर को पहचानने की क्षमता विकसित होती है।
  - ✓ विभिन्न साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्राप्ति में सहायक है।

- श्रवण कौशल शिक्षण के उद्देश्य
  - ✓ श्रुति सामग्री का सारांश ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना।
  - ✓ धैर्य पूर्वक सुनना, सुनने के शिष्टाचार का पालन करना।
  - ✓ ग्रहण शीलता की मन स्थिति बनाए रखना। शब्दों, मुहावरों या उक्तियों का अर्थ का भाव समझना।
  - ✓ छात्रों में भाषा का साहित्य के प्रति रुचि पैदा करना।
  - ✓ छात्रों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास करना।
  - ✓ भावों, विचारों को ढंग से समझने की शक्ति का विकास करना।

वाचन कौशल (बोलने का कौशल)

- वाचन कौशल का अर्थ - वाचन या बोलना भाषा का वह रूप है जिसका सबसे अधिक प्रयोग होता है। भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का साधन साधारणतया उच्चारित भाषा ही होती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वाचन\ बोलने की आवश्यकता होती है। व्यक्ति का सबसे बड़ा आभूषण उसकी मधुर वाणी है। वाचन एवं लेखन कौशल को अभिव्यंजनात्मक/उत्पादक कौशल कहते हैं

- वाचन कौशल का महत्व
  - ✓ विचारों के आदान-प्रदान के लिए।
  - ✓ सरल , स्पष्ट एवं सहज बातचीत के लिए।
  - ✓ मौखिक भाषा के प्रयोग में कुशल व्यक्ति, अपनी वाणी से जादू जगह सकता है।
  - ✓ सामाजिक जीवन में सामंजस्य तथा सामाजिक संबंधों के मुद्रण बनाने में वाचन कौशल प्रमुख भूमिका में होती है।

- वाचन कौशल के उद्देश्य
  - ✓ बालकों का उच्चारण शुद्ध होना चाहिए।
  - ✓ कक्षा में छात्रों को उचित स्वर, उचित गति के साथ बोलना सिखाना।
  - ✓ छात्रों को सही व्याकरण वाली भाषा का प्रयोग करना सिखाना।
  - ✓ बोलने में विराम चिन्हों का ध्यान रखना सिखाना।
  - ✓ छात्रों को धारा प्रवाह, प्रभावपूर्ण बानी में बोलना सिखाना।
  - ✓ अवसर अनुकूल भाषा का प्रयोग करना सिखाना।
  - ✓ सरल सुबोध तथा मुहावरे दार भाषा का प्रयोग सिखाना।
  - ✓ स्पष्टता वाचन कौशल का एक महत्वपूर्ण गुण होता है।
  - ✓ बालकों को स्पष्ट भाषा प्रयोग करना सिखाना।

पठन कौशल (पढ़कर अर्थ ग्रहण करने का कौशल)

- पठन कौशल का अर्थ - साधारण अर्थ में पठन कौशल से तात्पर्य है कि लिखित भाषा को पढ़ना। भाषा कौशल में पठन कौशल का अर्थ है लिखी हुई भाषा को उच्चारित करना तथा भाग को ग्रहण करना। भाषा शिक्षण में पठन कौशल पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाता है। पठन ज्ञान प्राप्त करने का सबसे आसान एवं सरल तरीका है।
- पठन कौशल के प्रकार - पठन कौशल के दो प्रकार होते हैं जो कि इस प्रकार है-

✓ सस्वर पठन - स्वर सहित पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने को सस्वर पठन कहा जाता है वर्णमाला में लिपिबद्ध प्रणव की पहचान सस्वर पठन के द्वारा ही कराई जाती है यह पठान की प्रारंभिक अवस्था होती है।

✓ मौन पठन - लिखित सामग्री को चुपचाप बिना आवाज निकाले मन ही मन में पढ़ना मौन पठन कहलाता है।

- पठन कौशल का महत्व

✓ यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक है छात्र शुद्ध उच्चारण सीख सकते हैं।

✓ शब्द भंडार में वृद्धि करने में सहायक होता है।

✓ व्याकरणिक ज्ञान में वृद्धि करने में सहायक।

✓ महान व्यक्तियों की जीवनी एवं आत्मकथाएँ पढ़कर उनके आदर्श गुणों का आत्मसात कर सकता है।

✓ नवीन पुस्तकों को बहकर नवीन जानकारी प्राप्त कर सकता है।

✓ पढ़कर समय का सदुपयोग कर सकता है।

- पठन कौशल के उद्देश्य

✓ बालकों को सही स्वार्थ तथा भाव के अनुसार पढ़ाना सिखाना तथा भाव को ग्रहण करना चाहिए।

✓ शुद्ध पठन सिखाना।

✓ पठान के द्वारा छात्र विराम चिन्ह, अर्ध विराम आदि चिन्हों का प्रयोग समाज जाता है।

✓ पठन से स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृत करना।

✓ सही उच्चारण,, ध्वनि, उचित बल आदि पठन से छात्र सीख जाता है।

✓ पठन से शब्द भंडार में वृद्धि होती है।

लेखन कौशल (लिखने का कौशल)

- लेखन कौशल का अर्थ - लिखकर अपने भावों को अभिव्यक्त करने की क्षमता को लेखन कौशल कहते हैं। कभी-कभी मनुष्य जिन बातों को किसी कारणवश बोलकर अभिव्यक्त नहीं कर पाता, तो वह उन बातों को लिखित भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकता है। इसके लिए लिपि ज्ञान होना आवश्यक है। लेखन कौशल शिक्षण के अंतर्गत लिपि का ज्ञान तथा उसके प्रयोग का शिक्षण दिया जाता है।

- लेखन कौशल का उद्देश्य

✓ बच्चों की लिखावट को सही कराना।

✓ बच्चों को अक्षरों की सही समझ कराना।

✓ छात्रों को विराम चिह्नों के प्रयोग का ज्ञान देने के साथ उनका उचित प्रयोग सिखाना।

✓ लेखन में सही मुहावरे, सूक्ति, लोकोक्ति का प्रयोग सिखाते हुए उनके लेखन को प्रभावशाली बनाना।

✓ छात्रों को लिखित अभिव्यक्ति के योग्य बनाना।

✓ लेखन कार्यों में छात्र की रुचि जगाना।

✓ छात्र में साहित्य के प्रति सकारात्मक सोच का विकास कराना।